

L A

- ① पारदर्शिता से → सरकार में जनता की भरोसेदारी बढ़ती है।
- (क) ग्राहकों व अनिश्चितताओं पर लोक लगती है।
- (ख) राज-गोष्ठे जनता तक पहुँचती है जिससे जनता-सेवा व लोक-सेवा प्रज्वलित होती है।
- (ग) सरकार के प्रति जनता का विश्वास व सहभागिता बढ़ती है। प्रशासनिक ढाँचा प्रज्वलित होता है व कार्यकुशलता में वृद्धि।

26

L B

मानव की प्रवृत्तियाँ

- सहल
- सत्य
- न्याय
- विकेक

2

C

वस्तुनिष्ठता

→ तार्किक

एवं सर्वज्ञान्य

आधार पर निर्णय

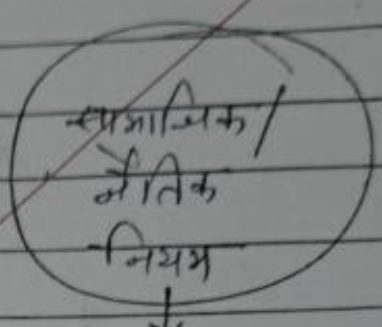
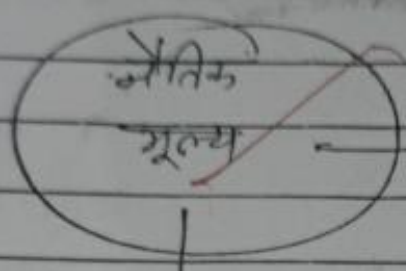
निर्णय लेते समय उन आधारों से मुक्त रहना जो व्यक्ति की व्यक्तिगत-चेतना में निहित हैं जैसे - पूर्वाग्रह, आन्धताएँ, व्यक्तिगत धारणाएँ आदि

2

I D

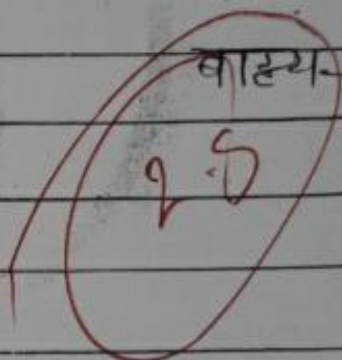
नैतिक मूल्य

मूल्य वे सबसे गहरे नैतिक प्रादुर्भाव होते हैं जिन्हें समाज की सामान्य समझ से सामाजिक जीवन को प्रेरित व संभव बनाने के लिए आवश्यक निर्मित किया जाता है।



आंतरिक → एथिक्स

बाह्य → मोरैलिटी



E

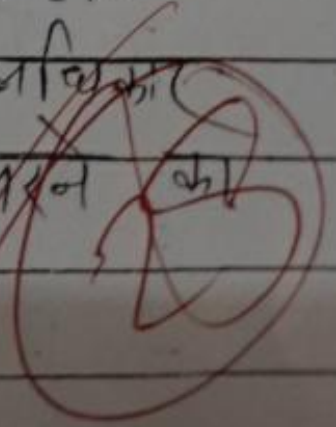
यूथनेशिया
↓
सिद्धांत

सम्मान जनक शोत →

- (i) गरिभापूर्ण जीवन का अधिकार
- (ii) पीड़ाजनक रोगों से कष्ट से दूरकरा

अनु. 21 के तहत

- (iii) जीवन का अधिकार प्राप्त हो करने का क्या नहीं



1 E

लेखक - श्री. आर. अम्बेडकर

1 G

- (i) प्रायः जन्मजात किंतु प्रभाव से निखरी
- (ii) सम्बन्धों से
- (iii) जीवन की सफलताएँ निर्धारित करती हैं।
- (iv) संगीत की कला/स्वर, क्रिकेट की क्षमता

1 H

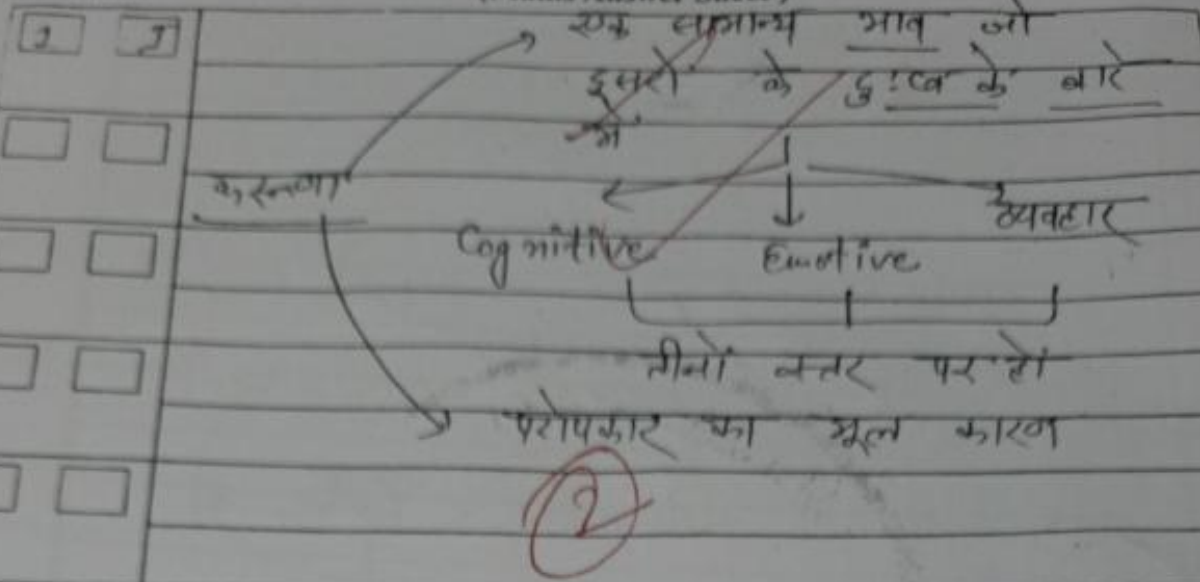
नैतिक मूल्यों का व्यवहार में अनुपालन आचरण है। यह किसी कृत्य के नैतिक या अनैतिक होने का प्रमुख निर्धारक है क्योंकि कोई कृत्य जब आचरण के स्तर पर आ जाता तब तक उसका निर्धारण करना मुश्किल।

25

I

- (1) दुःख है।
- (2) दुःख का कारण - दुर्घटनाएँ हैं।
- (3) दुःख निदान है - दुःख अभिगमिनी प्रतिपदा
- (4) दुःख निदान के उपाय - आध्यात्मिक योग

2



- ① नीति निर्धारण
- ② नीतियों, योजनाओं का क्रियान्वयन
- ③ प्रत्यायोजित विधान
- ④ प्रशासकीय न्यायिक निर्णय

नैतिक संज्ञिता

आचरण संज्ञिता

- ① सामान्य एवं अभूत
- ② स्थायी (सामान्यतः)
- ③ नैतिक मूल्यों का समावेश

- ① विशिष्ट व भूत
- ② परिवर्तनशील
- ③ नैतिक मूल्यों से सुसंगत क्रिया का समावेश

प्रश्न संख्या

1 0

सरस्वती

2 A

सांख्यिक आगत के अग्रदूत और
ब्रह्मसमाज के संस्थापक रामाराज मोहन रॉय
का प्रभुत्व योगदान महिला अधिकारों को
लेकर है -

सांख्यिक

सुधार कार्य

3-5

→ 1) 1828 ब्रह्मसमाज
सांख्यिक सुधार हेतु

→ 2) सती प्रथा उन्मूलन
1829 - अविनिर्भक्त

→ 3) बहुविवाह का विरोध

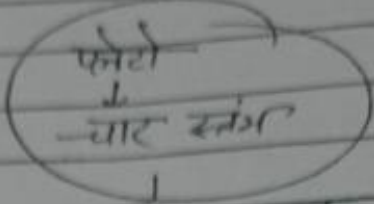
→ 4) विधवा पुनर्विवाह का
समर्थन

→ 5) महिलाओं की शिक्षा
सम्पत्ति का उत्तराधिकार
के लिए कार्य

→ 6) अस्पृश्यता अंधविश्वास
आतिवाद का विरोध

सर्वोत्तम हैं

Q R



न्याय

सांख्यिक

शिक्षा

नियंत्रण

① न्याय राज्य का कानूनी रूप नहीं बल्कि नैतिक सङ्ग्रह है।

② आत्मा के समान है।

③ अहमत्सय व्याघाति → एकता → लाभजन्य।

④ न्याय की स्थापना हेतु साहस व व्यापारी को विवेक (प्रशासन) द्वारा नियंत्रित किया जाए तभी न्याय की स्थापना होगी क्योंकि

उत्पादक वर्ग → लालच

सैनिक → साहस क्रोध

प्रशासक → विवेक

विवेक

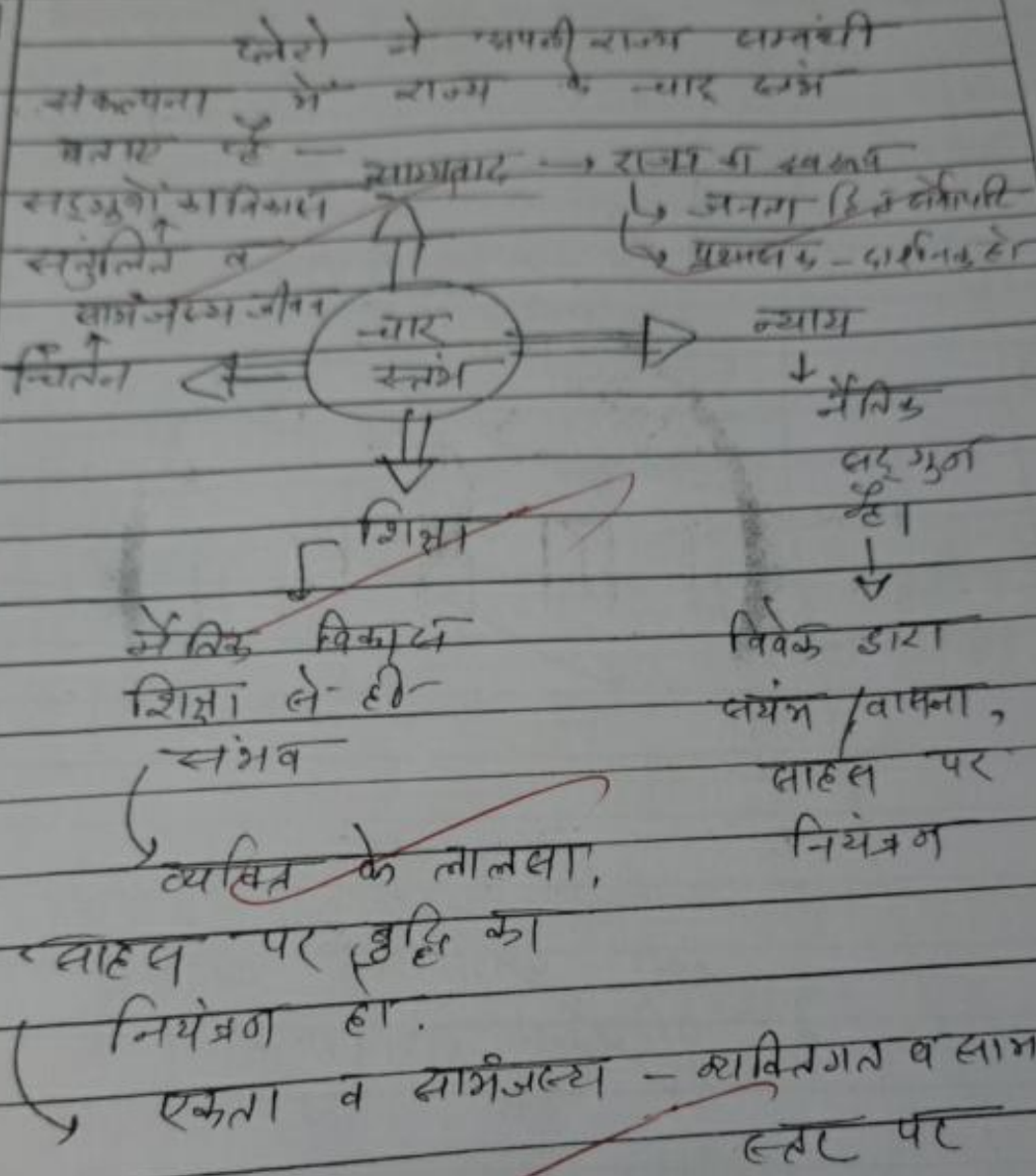
नियंत्रण

उत्पादक

सैनिक

इस तरह वर्तमान में न्याय स्थापना हेतु विवेकशील प्रशासक वर्ग द्वारा सैनिक व धार्मिक विनियमन किया जाता है।

II



इस तरह प्लेटो के राज्य के चार लक्षण एक काल्पनिक और आदर्श-भूत राज्य की संकल्पना कल्पना की

14

2 E

→ The Problem of Rupee में-

→ इसी को अन्य उद्योगों के समान माना जाए।

→ बरी व छोटी जोत विभेद समाप्त हो।

आर्थिक चिन्तन

→ सहज कर प्रणाली हो।

→ किरण शूलक संग्राम की स्थापना।

→ आर्थिक असमानता दूर हो तभी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन संभव होगा।

→ सभी को - संग्राम अवसर मिलें।

4

अम्बेडकर के आर्थिक विचार

अभी प्रासंगिक है जो समावेशी व सार्वजनिक विकास के लिए आवश्यक है।

पृष्ठ संख्या

3 6

1

एक लेखनशील, सत्राजवादी विचारक
को हमेशा नैतिक, प्रसंगिक
पाठकों (हिफाउटेसी) से बचना चाहिए
जो वह सामाजिक सुधारों को
निश्चित कर सकता है।

वस्तुतः यदि निशांत के
विचारों को और आन्वरण ले चले
होगा तो (कथनी - करनी अलग-
अलग) सभाज पर उनकी बात
विचारों का प्रभाव सीमित या
अप्रभावी हो जाएगा।

इतना ही नहीं इस प्रसंगिक
का सभाज पर नकारात्मक एवं
विपरीत प्रभाव पड़ सकता है जैसे -
लोगों की यह धारणा विकसित
हो सकती है कि जब एक कुदृष्टि
के कथन और कार्य में अंतर है
तो हमारे क्या न हो ?

अतः निशांत को अपने
बच्चों को भी सरकारी स्कूल में
भेजना चाहिए अपनी गलती स्वीकारनी चाहिए।

35